



Quran Plus School

10

आखिरी दस सूरतें

وَرَتِّلِ الْقُرْآنَ تَرْتِيلاً

कुरआन 73:4

ज़बानी याद करें — अरबी, आसान उच्चारण, मतलब और हर सूरह का सबक।

अरबी (इंडो-पाक)

हिंदी उच्चारण

हिंदी मतलब

ट्रैकर

यह किताब इसकी है:



ऑनलाइन खेलें
टेस्ट मोड · प्रोग्रेस



आखिरी दस सूरतें

कैसे याद करें

1

सुनें

उस्ताद या किसी अच्छे क़ारी से
सूरह सुनें और उंगली से अरबी
इबारत पर साथ-साथ चलें।

2

एक-एक आयत

एक आयत 5 बार देखकर पढ़ें, फिर
5 बार बिना देखें।

3

आयतें जोड़ें

नई आयत को पिछली आयतों के
साथ मिलाकर एक साथ पढ़ें।

4

नमाज़ में पढ़ें

सूरह अपनी नमाज़ में पढ़ें और
रोज़ाना अम्मी-अब्बू को सुनाएँ।

तिलावत से पहले

तअव्वुज़

أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ
अऊजु बिल्लाहि मिनश-शैतानिर-रजीम

मैं शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह माँगता हूँ।

बिस्मिल्लाह

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
बिस्मिल्लाहिर-रहमानिर-रहीम

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

इस तरतीब से याद करें

अन-नास (सबसे छोटी) से शुरू करें और अल-फ़ील तक जाएँ।

1

سورة الناس

6 आयतें

2

سورة الفلق

5 आयतें

3

سورة الاخلاص

4 आयतें

4

سورة المسد

5 आयतें

5

سورة النصر

3 आयतें

6

سورة الكافرون

6 आयतें

7

سورة الكوثر

3 आयतें

8

سورة الماعون

7 आयतें

9

سورة قريش

4 आयतें

10

سورة الفيل

5 आयतें



आखिरी दस सूरतें

114

सूरह An-Nas

इंसान · मक्की · 6 आयतें

سورة الناس

याद हो गई
★★★★

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ﴿١﴾ مَلِكِ النَّاسِ ﴿٢﴾ إِلَهِ النَّاسِ ﴿٣﴾ مِنْ شَرِّ
الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ﴿٤﴾ الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ﴿٥﴾ مِنَ
الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ﴿٦﴾

1

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ

कुल अरुजु बिरब्बिन-नास

कह दीजिए: मैं लोगों के रब की पनाह माँगता हूँ,

2

مَلِكِ النَّاسِ

मलिकिन-नास

लोगों के बादशाह की,

3

إِلَهِ النَّاسِ

इलाहिन-नास

लोगों के माबूद की,

4

مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ

मिन शरिल-वसवासिल-खन्नास

वसवसा डालने वाले, (अल्लाह का जिक्र सुनकर) पीछे हट जाने वाले के शर से,



आखिरी दस सूरतें

5

الَّذِي يُوسِّسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ

अल्लज़ी युवसविसु फ़ी सुदूरिन-नास

जो लोगों के दिलों में वसवसे डालता है,

6

مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ

मिनल-जिन्नति वन-नास

जिन्नों में से हो या इंसानों में से।

सबक़

शैतान के वसवसों से अल्लाह की पनाह माँगें — सुबह, शाम और सोने से पहले पढ़ें।

फ़ज़ीलत

नबी ﷺ ने अल-फलक़ और अन-नास के बारे में फ़रमाया: “आज रात ऐसी आयतें नाज़िल हुई हैं जिनकी मिसाल कभी नहीं देखी गई।”

📖 सहीह मुस्लिम 814

113

सूरह Al-Falaq

सुबह · मक्की · 5 आयतें

سورة الفلق



याद हो गई

★ ★ ★

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ﴿١﴾ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ﴿٢﴾ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ﴿٣﴾ وَمِنْ شَرِّ النَّفَّاثِ فِي الْعُقَدِ ﴿٤﴾ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ﴿٥﴾

1

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ

कुल अऊजु बिरब्बिल-फलक़

कह दीजिए: मैं सुबह के रब की पनाह माँगता हूँ,

2

مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ

मिन शरि मा खलक़

हर उस चीज़ के शर से जो उसने पैदा की,



आखिरी दस सूरतें

3

وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ

व मिन शरि ग़ासिकिन इज़ा वक़ब

और अँधेरी रात के शर से जब वह छा जाए,

4

وَمِنْ شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ

व मिन शरिन-नफ़फ़ासाति फ़िल-उक़द

और गिरहों में फूँकने वालियों (जादूगरों) के शर से,

5

وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ

व मिन शरि हासिदिन इज़ा हसद

और हसद करने वाले के शर से जब वह हसद करे।

सबक़

अल्लाह हर नुक़सान से बचाता है — अँधेरी रात, जादू और हसद से।

फ़ज़ीलत

नबी ﷺ हर रात सोने से पहले अल-इख़लास, अल-फ़लक़ और अन-नास पढ़कर हाथों पर फूँकते और उन्हें अपने जिस्म पर फेरते थे।

📖 सहीह बुख़ारी 5017

इस हफ़्ते दोहराएँ

जिस दिन यह सू़रह ज़बानी पढ़ें, एक ख़ाना रंग दें।

सोम

मंगल

बुध

जुमेरात

जुमा

शनि

इतवार

मैंने सुनाई...

उन लोगों के नाम लिखें जिन्हें आपने यह सू़रह सुनाई।



आखिरी दस सूरतें

112

सूरह Al-Ikhlās

इखलास (खालिस तौहीद) • मक्की • 4 आयतें

سورة الاخلاص



याद हो गई

★★★

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ۝ اللَّهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ ۝

1

قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ

कुल हुवल्लाहु अहद

कह दीजिए: वह अल्लाह एक है।

2

اللَّهُ الصَّمَدُ

अल्लाहुस-समद

अल्लाह बेनियाज़ है (सब उसके मोहताज हैं)।

3

لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ

लम यलिद व लम यूलद

न उसकी कोई औलाद है और न वह किसी की औलाद है।

4

وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ

व लम यकुल-लहु कुफुवन अहद

और कोई उसके बराबर नहीं।

सबक़

अल्लाह एक है। वह किसी का मोहताज नहीं, सब उसके मोहताज हैं, और कोई उस जैसा नहीं।

फ़ज़ीलत

नबी ﷺ ने फ़रमाया: “यह (सूरह) तिहाई कुरआन के बराबर है।”

📖 सहीह बुखारी 5013



आखिरी दस सूरतें

111

सूरह Al-Masad

खजूर की छाल · मक्की · 5 आयतें

سورة المسد



याद हो गई



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ ۝ مَا أَغْنَىٰ عَنْهُ مَالُهُ وَمَا كَسَبَ ۝
سَيَصْلَىٰ نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۝ وَامْرَأَتُهُ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ۝ فِي
جِيدِهَا حَبْلٌ مِّن مَّسَدٍ ۝

1

تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ

तब्बत यदा अबी लहबिव-व तब्ब

अबू लहब के दोनों हाथ टूट जाएँ — और वह खुद भी हलाक हो गया।

2

مَا أَغْنَىٰ عَنْهُ مَالُهُ وَمَا كَسَبَ

मा अगना अन्हु मालुह व मा कसब

न उसका माल उसके काम आया और न जो उसने कमाया।

3

سَيَصْلَىٰ نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ

सयस्ला नारन ज़ाता लहब

वह जल्द भड़कती हुई आग में दाखिल होगा,

4

وَامْرَأَتُهُ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ

वम्र-अतुहू हम्मालतल-हतब

और उसकी बीवी भी, जो लकड़ियाँ उठाने वाली है,



आखिरी दस सूरतें

5

فِي جِيدِهَا حَبْلٌ مِّن مَّسَدٍ

फ़ी जीदिहा हब्लुम-मिम-मसद

उसकी गर्दन में खजूर की छाल की रस्सी होगी।

सबक

जो हक़ की मुखालफ़त करे और दूसरों को तकलीफ़ दे, माल उसे नहीं बचा सकता।

क्या आप जानते हैं?

अबू लहब नबी ﷺ का चचा था जो आपकी मुखालफ़त करता और आपको तकलीफ़ देता था; इस सूरह को सूरह अल-लहब भी कहते हैं।

110

सूरह An-Nasr

मदद · मदनी · 3 आयतें

سورة النصر



याद हो गई

★ ★ ★

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ ﴿١﴾ وَرَأَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُونَ فِي دِينِ اللَّهِ
أَفْوَاجًا ﴿٢﴾ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ۖ إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا ﴿٣﴾

1

إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ

इज़ा जाअ नसुल्लाहि वल-फ़तह

जब अल्लाह की मदद और फ़तह आ जाए,

2

وَرَأَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُونَ فِي دِينِ اللَّهِ أَفْوَاجًا

व र-अय्तन-नासा यदखुलूना फ़ी दीनिल्लाहि अफ़वाजा

और आप लोगों को देखें कि वे फ़ौज-दर-फ़ौज अल्लाह के दीन में दाखिल हो रहे हैं,

3

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ۖ إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا

फ़सब्बिह बिहम्दि रब्बिका वस्तग़फ़िरह, इन्नहू काना तव्वाबा

तो अपने रब की हम्द के साथ उसकी तस्बीह कीजिए और उससे बख्शिश माँगिए, बेशक वह बहुत तौबा क़बूल करने वाला है।



आखिरी दस सूरतें

सबक

जब अल्लाह कामयाबी दे तो उसकी हम्द करें, शुक्र अदा करें और बख्शिष माँगें।

क्या आप जानते हैं?

हज़रत इब्न अब्बास (रज़ि.) ने इस सूरह से समझा कि नबी ﷺ की दुनियावी जिंदगी का वक़्त पूरा होने वाला है।

📖 सहीह बुखारी 4970

109

सूरह Al-Kafirun

काफ़िर · मक्की · 6 आयतें

سورة الكافرون

याद हो गई
★★★★

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ ﴿١﴾ لَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ ﴿٢﴾ وَلَا أَنْتُمْ عِبُدُونَ مَا
أَعْبُدُ ﴿٣﴾ وَلَا أَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُمْ ﴿٤﴾ وَلَا أَنْتُمْ عِبُدُونَ مَا أَعْبُدُ ﴿٥﴾
لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ ﴿٦﴾

1

قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ

कुल या अय्युहल-काफ़िरून

कह दीजिए: ऐ काफ़िरो!

2

لَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ

ला अअबुदु मा तअबुदून

मैं उनकी इबादत नहीं करता जिनकी तुम इबादत करते हो,

3

وَلَا أَنْتُمْ عِبُدُونَ مَا أَعْبُدُ

व ला अन्तुम आबिदूना मा अअबुद

और न तुम उसकी इबादत करने वाले हो जिसकी मैं इबादत करता हूँ।

4

وَلَا أَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُمْ

व ला अना आबिदुम-मा अबत्तुम

और न मैं उनकी इबादत करने वाला हूँ जिनकी तुमने इबादत की,



आखिरी दस सूरतें

5

وَلَا أَنْتُمْ عِبْدُونَ مَا أَعْبُدُ

व ला अन्तुम आबिदूना मा अअबुद

और न तुम उसकी इबादत करने वाले हो जिसकी मैं इबादत करता हूँ।

6

لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ

लकुम दीनुकुम व लिया दीन

तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन और मेरे लिए मेरा दीन।

सबक़

साफ़ और मज़बूत रहें: हम सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करते हैं।

फ़ज़ीलत

नबी ﷺ ने फ़रमाया: “‘कुल या अय्युहल-काफ़िरून’ पढ़ो और उसके ख़त्म पर सो जाओ, क्योंकि यह शिर्क से बराअत (बेज़ारी) है।”

📖 सुनन अबी दाऊद 5055

108

सूरह Al-Kawthar

बहुत ज़्यादा भलाई • मक्की • 3 आयतें

سورة الكوثر

☐ याद हो गई
★ ★ ★

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
إِنَّا أَعْطَيْنَكَ الْكَوْثَرَ ﴿١﴾ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ﴿٢﴾ إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ
الْأَبْتَرُ ﴿٣﴾

1

إِنَّا أَعْطَيْنَكَ الْكَوْثَرَ

इन्ना अअतैनाकल-कौसर

बेशक हमने आपको कौसर (बहुत ज़्यादा भलाई) अता फ़रमाया।

2

فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ

फ़सल्लि लिरब्बिका वन्हर

तो अपने रब के लिए नमाज़ पढ़िए और कुर्बानी कीजिए।



आखिरी दस सूरतें

3

إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ

इन्ना शानि-अका हुवल-अबतर

बेशक आपका दुश्मन ही (हर भलाई से) कटा हुआ है।

सबक

अल्लाह ने नबी ﷺ को बेशुमार नेमतें दीं — हम नमाज़ और कुर्बानी से अल्लाह का शुक्र अदा करते हैं।

फ़ज़ीलत

नबी ﷺ ने फ़रमाया: “कौसर एक नहर है जिसका मेरे रब ने मुझसे वादा फ़रमाया है, उसमें बहुत भलाई है।”

📖 सहीह मुस्लिम 400

107

सूरह Al-Ma'un

इस्तेमाल की मामूली चीज़ें • मक्की • 7 आयतें

سورة الماعون



याद हो गई

★ ★ ★

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
 أَرَأَيْتَ الَّذِي يُكَذِّبُ بِالْدِّينِ ﴿١﴾ فَذَلِكَ الَّذِي يَدْعُ الْيَتِيمَ ﴿٢﴾ وَ
 لَا يَحْضُ عَلَى طَعَامِ الْمِسْكِينِ ﴿٣﴾ فَوَيْلٌ لِلْمُصَلِّينَ ﴿٤﴾ الَّذِينَ هُمْ
 عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ﴿٥﴾ الَّذِينَ هُمْ يُرَاءُونَ ﴿٦﴾ وَيَمْنَعُونَ الْمَاعُونَ ﴿٧﴾

1

أَرَأَيْتَ الَّذِي يُكَذِّبُ بِالْدِّينِ

अ-र-अय्तल-लज़ी युक्ज़िबु बिद-दीन

क्या आपने उस शख्स को देखा जो रोज़-ए-जज़ा को झुठलाता है?

2

فَذَلِكَ الَّذِي يَدْعُ الْيَتِيمَ

फ़ज़ालिकल-लज़ी यदुल-यतीम

यही वह है जो यतीम को धक्के देता है,



आखिरी दस सूरतें

3

وَلَا يَحْضُ عَلَى طَعَامِ الْمِسْكِينِ

व ला यहुजु अला तआमिल-मिस्कीन

और मिस्कीन को खाना खिलाने की तरगीब नहीं देता।

4

فَوَيْلٌ لِلْمُصَلِّينَ

फ़वैलुल-लिल-मुसल्लीन

तो उन नमाज़ियों के लिए हलाकत है

5

الَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ

अल्लज़ीना हुम अन सलातिहिम साहून

जो अपनी नमाज़ से गाफ़िल हैं,

6

الَّذِينَ هُمْ يُرَاءُونَ

अल्लज़ीना हुम युराऊन

जो दिखावा करते हैं,

7

وَيَمْنَعُونَ الْمَاعُونَ

व यमनऊनल-माऊन

और इस्तेमाल की मामूली चीज़ें भी (माँगने पर) नहीं देते।

सबक़

यतीमों और मिस्कीनों का खयाल रखें, दिल लगाकर नमाज़ पढ़ें, और छोटी चीज़ें भी बाँटें।

क्या आप जानते हैं?

“अल-माऊन” का मतलब है रोज़मर्रा की वे छोटी चीज़ें जो पड़ोसी एक-दूसरे को देते हैं, जैसे बर्तन, बाल्टी या नमक।

पहले अल्फ़ाज़

बिना देखे इस सूरह की हर आयत का पहला लफ़ज़ बताएँ।



आखिरी दस सूरतें

106

सूरह Quraysh

कुरैश — नबी ﷺ का कबीला • मक्की • 4 आयतें

سورة قريش

याद हो गई
★★★★

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
لَا يَلْفِ قُرَيْشٌ ۝۱ الْفِهِمَ رِحْلَةَ الشِّتَاءِ وَالصَّيْفِ ۝۲ فَلْيَعْبُدُوا رَبَّ
هَذَا الْبَيْتِ ۝۳ الَّذِي أَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوعٍ ۖ وَآمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ۝۴

1

لَا يَلْفِ قُرَيْشٌ

लि-ईलाफ़ि कुरैश

कुरैश के मानूस होने की वजह से,

2

الْفِهِمَ رِحْلَةَ الشِّتَاءِ وَالصَّيْفِ

ईलाफ़िहिम रिहलतश-शिताइ वस-सैफ़

यानी सर्दी और गर्मी के सफ़र से उनके मानूस होने की वजह से,

3

فَلْيَعْبُدُوا رَبَّ هَذَا الْبَيْتِ

फ़ल्यअबुदू रब्बा हाज़ल-बैत

उन्हें चाहिए कि इस घर (काबा) के रब की इबादत करें,

4

الَّذِي أَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوعٍ ۖ وَآمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ

अल्लज़ी अतअमहुम मिन जूइव-व आमनहुम मिन खौफ़

जिसने उन्हें भूख में खाना दिया और खौफ़ से अमन दिया।

सबक़

खाना और अमन अल्लाह की नेमतें हैं — हम उसकी इबादत करके शुक्र अदा करते हैं।

क्या आप जानते हैं?

कुरैश तिजारत के लिए सर्दियों में यमन और गर्मियों में शाम (सीरिया) का सफ़र करते थे, और काबा के पास रहने की वजह से लोग उनकी इज़ज़त करते थे।



आखिरी दस सूरतें

105

सूरह Al-Fil

हाथी · मक्की · 5 आयतें

سورة الفيل



याद हो गई



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
 أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِأَصْحَابِ الْفِيلِ ﴿١﴾ أَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِي
 تَضْلِيلٍ ﴿٢﴾ وَأَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا أَبَابِيلَ ﴿٣﴾ تَرْمِيهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ
 سِجِّيلٍ ﴿٤﴾ فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّا كُوِلَ ﴿٥﴾

1

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِأَصْحَابِ الْفِيلِ

अलम तरा कैफ़ा फ़अला रब्बुका बि-अस्हाबिल-फ़ील

क्या आपने नहीं देखा कि आपके रब ने हाथी वालों के साथ क्या किया?

2

أَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِي تَضْلِيلٍ

अलम यजअल कैदहुम फ़ी तज़लील

क्या उसने उनकी चाल को नाकाम नहीं कर दिया?

3

وَأَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا أَبَابِيلَ

व अरसला अलैहिम तैरन अबाबील

और उन पर परिंदों के झुंड के झुंड भेजे,

4

تَرْمِيهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيلٍ

तरमीहिम बिहिजारतिम-मिन सिज्जील

जो उन पर पकी हुई मिट्टी के कंकड़ फेंकते थे,



आखिरी दस सूरतें

5

فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّا كُؤِلَ

फ़जअलहुम कअस्फ़िम-मअकूल

फिर उन्हें खाए हुए भूसे की तरह कर दिया।

सबक

अल्लाह अपने घर की हिफ़ाज़त करता है, और कोई लश्कर उसके फ़ैसले को शिकस्त नहीं दे सकता।

क्या आप जानते हैं?

यह वाक़िआ उस साल पेश आया जिस साल नबी ﷺ पैदा हुए, जिसे “आमुल-फ़ील” (हाथी वाला साल) कहते हैं।

मेरी नमाज़ में

जिस दिन यह सूरह नमाज़ में पढ़ें, एक खाना रंग दें।

सोम

मंगल

बुध

जुमेरात

जुमा

शनि

इतवार

इस हफ़्ते दोहराएँ

जिस दिन यह सूरह ज़बानी पढ़ें, एक खाना रंग दें।

सोम

मंगल

बुध

जुमेरात

जुमा

शनि

इतवार



आखिरी दस सूरतें

मेरा हिफ़ज़ ट्रैकर

हर मरहले पर निशान लगाएँ। हर सूरह को चार हफ़्ते तक हफ़्ते में एक बार दोहराएँ।

सूरह	सुनी	याद की	सुनाई	दोहराई · हफ़्ता 1	दोहराई · हफ़्ता 2	दोहराई · हफ़्ता 3	दोहराई · हफ़्ता 4	★
1. An-Nas سورة الناس	☐	☐	☐	☐	☐	☐	☐	☆☆☆
2. Al-Falaq سورة الفلق	☐	☐	☐	☐	☐	☐	☐	☆☆☆
3. Al-Ikhlās سورة الاخلاص	☐	☐	☐	☐	☐	☐	☐	☆☆☆
4. Al-Masad سورة المسد	☐	☐	☐	☐	☐	☐	☐	☆☆☆
5. An-Nasr سورة النصر	☐	☐	☐	☐	☐	☐	☐	☆☆☆
6. Al-Kafirun سورة الكافرون	☐	☐	☐	☐	☐	☐	☐	☆☆☆
7. Al-Kawthar سورة الكوثر	☐	☐	☐	☐	☐	☐	☐	☆☆☆
8. Al-Ma'un سورة الماعون	☐	☐	☐	☐	☐	☐	☐	☆☆☆
9. Quraysh سورة قريش	☐	☐	☐	☐	☐	☐	☐	☆☆☆
10. Al-Fil سورة الفيل	☐	☐	☐	☐	☐	☐	☐	☆☆☆

वालिदैन और उस्तादों के लिए

- असल मतन अरबी है; उच्चारण की लाइन सिर्फ़ मदद के लिए है। सही तलफ़ूज़ (तजवीद) उस्ताद से सीखा जाता है।
- रोज़ थोड़ा-सा सबसे अच्छा है: एक नई आयत, और पुरानी सूरतों की दोहराई।
- हर क़दम पर शाबाशी दें और बच्चे को नमाज़ में पढ़ने दें।

उस्ताद के दस्तख़त

वालिदैन के दस्तख़त



सर्टिफिकेट

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ

यह सर्टिफिकेट दिया जाता है

कुरआन मजीद की आखिरी दस सूरतें ज़बानी याद करने पर — माशाअल्लाह!



तारीख

उस्ताद / वालिदैन